وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَقُولُ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَبِٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ وَمَا هُم
بِمُؤۡمِنِينَ ٨ يُخَٰدِعُونَ ٱللَّهَ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَمَا يَخۡدَعُونَ
إِلَّآ أَنفُسَهُمۡ وَمَا يَشۡعُرُونَ ٩ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٞ فَزَادَهُمُ ٱللَّهُ
مَرَضٗاۖ وَلَهُمۡ عَذَابٌ أَلِيمُۢ بِمَا كَانُواْ يَكۡذِبُونَ ١٠ وَإِذَا قِيلَ
لَهُمۡ لَا تُفۡسِدُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ قَالُوٓاْ إِنَّمَا نَحۡنُ مُصۡلِحُونَ ١١ أَلَآ
إِنَّهُمۡ هُمُ ٱلۡمُفۡسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشۡعُرُونَ ١٢ وَإِذَا قِيلَ لَهُمۡ
ءَامِنُواْ كَمَآ ءَامَنَ ٱلنَّاسُ قَالُوٓاْ أَنُؤۡمِنُ كَمَآ ءَامَنَ ٱلسُّفَهَآءُۗ
أَلَآ إِنَّهُمۡ هُمُ ٱلسُّفَهَآءُ وَلَٰكِن لَّا يَعۡلَمُونَ ١٣ وَإِذَا لَقُواْ
ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ قَالُوٓاْ ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوۡاْ إِلَىٰ شَيَٰطِينِهِمۡ قَالُوٓاْ إِنَّا
مَعَكُمۡ إِنَّمَا نَحۡنُ مُسۡتَهۡزِءُونَ ١٤ ٱللَّهُ يَسۡتَهۡزِئُ بِهِمۡ
وَيَمُدُّهُمۡ فِي طُغۡيَٰنِهِمۡ يَعۡمَهُونَ ١٥ أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشۡتَرَوُاْ
ٱلضَّلَٰلَةَ بِٱلۡهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَٰرَتُهُمۡ وَمَا كَانُواْ مُهۡتَدِينَ
١٦ مَثَلُهُمۡ كَمَثَلِ ٱلَّذِي ٱسۡتَوۡقَدَ نَارٗا فَلَمَّآ أَضَآءَتۡ مَا
حَوۡلَهُۥ ذَهَبَ ٱللَّهُ بِنُورِهِمۡ وَتَرَكَهُمۡ فِي ظُلُمَٰتٖ لَّا
يُبۡصِرُونَ ١٧ صُمُّۢ بُكۡمٌ عُمۡيٞ فَهُمۡ لَا يَرۡجِعُونَ ١٨ أَوۡ
كَصَيِّبٖ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ فِيهِ ظُلُمَٰتٞ وَرَعۡدٞ وَبَرۡقٞ يَجۡعَلُونَ
أَصَٰبِعَهُمۡ فِيٓ ءَاذَانِهِم مِّنَ ٱلصَّوَٰعِقِ حَذَرَ ٱلۡمَوۡتِۚ وَٱللَّهُ
مُحِيطُۢ بِٱلۡكَٰفِرِينَ ١٩ يَكَادُ ٱلۡبَرۡقُ يَخۡطَفُ أَبۡصَٰرَهُمۡۖ كُلَّمَآ

أَضَآءَ لَهُم مَّشَوْاْ فِيهِ وَإِذَآ أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُواْۚ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَٰرِهِمْۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٢٠

Theme	
Hypocrites and consequences of hypocrisy. Examples of their deeds.	मुनाफ़िक़ों और निफ़ाक़ के अंजाम। उनके आमाल की मिसालें।
Tarjumani	
There are some people who say: "We believe in Allah and the Last Day;" yet, they are not true believers. They try to deceive Allah and the believers. However, they deceive none except themselves; yet, they do not realize it. In their hearts is a disease (of hypocrisy, and because of their misbehaviour) Allah has increased their disease and they shall have a painful punishment for the lies they have told. When it is said to them: "Do not make mischief on earth," they say: "We Beware! They are the ones make peace." who make mischief but they do not realize it. When they are told: "Believe	बाज लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं की हम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए हैं, हालाँकि दरहकीकत वे मोमिन नहीं हैं | वे अल्लाह और ईमान लनेवालों के साथ धोखेबाजी कर रहे हैं, मगर दरअस्ल वे ख़ुद अपने आप ही को धोके में डाल रहे हैं और उन्हें इसका शुऊर नहीं है | उनके दिलों में एक बीमारी है जिसे अल्लाह ने और ज्यादा बढ़ा दिया, और जो झूठ वे बोलते हैं, उसकी पादाश में उनके लिए दर्दनाक सजा है| जब कभी उनसे कहा गया कि जमीन में फसाद बरपा न करो, तो उन्होंने यही कहा कि ''हम तो इस्लाह करनेवाले हैं |''--- ख़बरदार, हक़ीकत में यही लोग मुफ़सिद हैं मगर इन्हें शुऊर नहीं है | और जब इनसे कहा गया कि जिस

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

of a deceiver. It is said that there is something elided here and that what is really meant is deceit of the Messenger of Allah ﷺ. Al-Hasan and others said that Allah has made their deceit of His Messenger equivalent to deceit of Himself because the Prophet ﷺ called them using Allah's Words. The same applies to their deceit of the believers as a whole: in reality they are trying to deceive Allah. Their deceit lies in their display of faith which differs from the disbelief they conceal. This results in their lives and property being spared and makes them think that they are safe and have been successful in deceiving the believers. Some interpreters said that.	गया है कि उनका धोखा उनके उन आमाल के ज़रिए है जो धोखा देने वालों जैसे होते हैं। यह भी कहा गया है कि यहाँ कुछ अल्फ़ाज़ महज़ूफ़ हैं, और अस्ल मानी यह हैं कि वह रसूलुल्लाह ﷺको धोखा देने की कोशिश करते हैं। इमाम हसन बसरी और दीगर उलेमा ने कहा है कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ को धोखा देने को अपने आप को धोखा देने के मुतरादिफ़ क़रार दिया है, क्योंकि नबी करीम ﷺ ने उन्हें अल्लाह के कलाम के ज़रिए दावत दी थी। इसी तरह तमाम मोमिनीन को धोखा देने का मामला भी है; हक़ीक़त में वह अल्लाह ही को धोखा देने की कोशिश कर रहे होते हैं। उनका धोखा इस बात में है कि वह ईमान का इज़हार करते हैं जबकि अपने अंदर कुफ्र को छिपाए रखते हैं। इसके नतीजे में उनकी जानें और माल महफ़ूज़ रहते हैं, और वह यह समझते हैं कि वह महफ़ूज़ हो गए हैं और मोमिनीन को धोखा देने में कामयाब हो चुके हैं। बाज़ मुफस्सिरीन ने यही तफ़्सीर

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

the result of what they do is that only they are deceived. There is a saying: 'Whoever tries to deceive someone who is not deceived has deceived himself.' This is true because deceit can only occur in respect of someone who does not know the inward reality. Any attempt to deceive someone who knows what is really going on is inevitably self-deceit. This is proof that the hypocrites do not recognise Allah since they do not know that He is not deceived. The Prophet ﷺ said, 'Do not deceive Allah. If anyone deceives Allah, Allah deceives him and his self deceives him while he is not aware.' They asked, 'Messenger of Allah, how can Allah be deceived?' He replied, 'By your doing what Allah has commanded while seeking the pleasure of another by it.' The full extent of this deception will be seen in the interpretation of Allah's words: *'Allah is mocking them.'*	उनके अमल का नतीजा सिर्फ़ यही होता है कि वह ख़ुद ही धोखे में पड़ते हैं। एक क़ौल है: "जो शख़्स ऐसे आदमी को धोखा देने की कोशिश करे जिसे धोखा नहीं दिया जा सकता, वह दरहक़ीक़त अपने आप को धोखा देता है।" यह बात दुरुस्त है, क्योंकि धोखा सिर्फ़ उसी शख़्स के साथ हो सकता है जो किसी चीज़ की बातिनी हक़ीक़त से वाक़िफ़ न हो। लेकिन जो शख़्स हक़ीक़त-ए-हाल को जानता हो, उसे धोखा देने की हर कोशिश लाज़िमन ख़ुद-फ़रेबी बन जाती है। यह इस बात की दलील है कि मुनाफ़िक़ अल्लाह तआला की मआरिफ़त नहीं रखते, क्योंकि अगर वह अल्लाह को पहचानते तो जानते कि उसे धोखा नहीं दिया जा सकता। नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह को धोखा देने की कोशिश न करो। जो शख़्स अल्लाह को धोखा देने की कोशिश करता है, अल्लाह उसे धोखे में डाल देता है, और

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

cause corruption on the earth,' they say, 'We are only putting things right.' [2:11]	ज़मीन में फ़साद न फैलाओ, तो वे कहते हैं: 'हम तो सिर्फ़ इस्लाह करने वाले हैं।'"
Corruption is the opposite of rightness. Its reality is turning from rectitude to its opposite. The meaning in the āyah is: 'Do not cause corruption on the earth through disbelief and friendliness with unbelievers and making people abandon their faith in Muḥammad ﷺ and the Qur'an.' It is said that the earth, before the Prophet ﷺ was sent, was full of corruption and many acts of disobedience were done in it. When the Messenger of Allah ﷺ was sent, the corruption was eliminated and the earth put right. Then, when people again perpetrated acts of disobedience, they corrupted the earth after it had been put right, as Allah says in another āyah: *'Do not corrupt the earth after it has been put right.'*	फ़साद, सलाह (दुरुस्ती और इस्लाह) की ज़िद्द है। इसकी हक़ीक़त यह है कि इंसान सीधी राह और दुरुस्त हालत से हटकर उसके बरअक्स रास्ते पर चल पड़े। इस आयत का मअनी यह है: "ज़मीन में कुफ़्र, काफ़िरों से दोस्ती, और लोगों को मुहम्मद ﷺ और क़ुरआन पर ईमान लाने से रोककर फ़साद न फैलाओ।" एक क़ौल यह भी है कि नबी करीम ﷺ की बअसत से पहले ज़मीन फ़साद और गुनाहों से भरी हुई थी, और उसमें अल्लाह की नाफ़रमानी के बहुत से काम किए जाते थे। जब रसूलुल्लाह ﷺ मबऊस हुए तो उस फ़साद का ख़ातिमा हुआ और ज़मीन की इस्लाह हो गई। फिर जब लोगों ने दोबारा गुनाहों और नाफ़रमानियों का इर्तिकाब शुरू कर दिया तो उन्होंने इस ज़मीन में दोबारा फ़साद बरपा कर दिया, हालाँकि उसकी इस्लाह हो चुकी थी।

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

sparked by their collision. This is rejected and not transmitted and Allah knows best. It is said that the root of thunder (*ra'd*) means movement. Hence *ri'dīd* is used for a coward. One form of the word means to tremble. The root of the word for lightning, *barq*, means 'glittering' and 'a bright light'. Associated with that is Burāq, the animal that the Messenger of Allah ﷺ rode in the Night Journey and which the Prophets before him rode. The sky trembles from thunder and flashes light with lightning.	आवाज़ है, और बर्क़ वह चिंगारी है जो इस टकराव के नतीजे में पैदा होती है। मुसन्निफ़ के नज़दीक यह क़ौल क़ाबिल-ए-क़बूल नहीं, इसकी कोई मोतबर रिवायत मनक़ूल नहीं, और हक़ीक़त का इल्म अल्लाह तआला ही को है। यह भी कहा गया है कि रअ्द का माद्दा हरकत और इज़्तिराब के मानी पर दलालत करता है। इसी मुनासबत से रिदीद का लफ़्ज़ बुज़दिल शख़्स के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसी माद्दे की एक सूरत का मानी काँपना और लरज़ना भी है। और बर्क़ का माद्दा चमकने, जगमगाने और रौशन नूर के मानी देता है। इसी से बुराक़ का नाम माख़ूज़ है, जो वह सवारी थी जिस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने शब-ए-मेराज सफ़र फ़रमाया, और आप से पहले अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम भी उस पर सवार होते थे। पस आसमान रअ्द के ज़रिये गूँजता और लरज़ता है, और बर्क़ के ज़रिये

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈

Ruku 3 [2 Baqarah 8-20] Hypocrite
≈≈≈